शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अम्बिकापुर नगर में भूमि उपयोग और कार्यात्मक कटिबंधों का भौगोलिक विश्लेषण

डॉ.अनिल कुमार सिन्हा
भूगोल विभाग
राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध संक्षेप

नगर मानव रचित धरातल की एक ऐसी सक्रिय भौगोलिक इकाई है जिनके उद्भव और वृद्धि में जीवधारियों की उत्पति और वृद्धि की प्रक्रिया का दर्शन होता है। जैसे जीवधारियों की उत्पत्ति भ्रुण से प्रारंभ होकर ढांचा विकास से गुजरती हुई स्वरूप निर्धारण तक गतिमान रहती है, उसी प्रकार नगर की उत्पत्ति एक नाभिक से शुरू होती है और मार्गो के सहारे उसकी ढांचागत वृद्धि होने लगती है। कालांतर में खुले क्षेत्र निर्मित होकर नगर को स्वरूप प्रदान करते है। प्रस्तुत शोध पत्र में अम्भिकापुर नगर में भूमि उपयोग और कार्यात्मक कटीबंधों का भौगोलिक विश्लेषण किया गया है।

कुंजी शब्द - कार्यात्मक कटिबंध, विकसित क्षेत्र, गंदी बस्ती, नगर निवेश क्षेत्र

भूमिका

वर्तमान में नगर संपूर्ण समाज के क्रिया कलापों की धुरी माने जाते है, यही कारण है कि आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यो की संश्लिष्टता नगरों में केन्द्रीत रहती है। किसी भी नगर का भूमि उपयोग एवं कार्यात्मक कटिबंधों का विश्लेषण नगर के वर्तमान स्वरूप को समझने के साथ-साथ भविष्य में नगरीय विस्तार की योजनाओ का प्रारूप बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तर में स्थित अम्बिकापुर नगर में विगत वर्षो में हुए भूमि उपयोग के बदलते प्रतिरूपों का अध्ययन करना है। नगर नियोजन सिद्धान्तों के अनुरूप बढ़ती जनसंख्या के लिए आवास, गंदी बस्तियों के बढ़ने से रोकना तथा तीव्र गति से बदलते नगरीय भूदृश्यों का विश्लेषण करने के साथ-साथ वर्ष 2020 तक के लिए आयोजना प्रस्तुत करना है।

अध्ययन उपागम एवं आंकडो का संकलन अम्बिकापुर नगर को एक पूर्ण इकाई मानते हुए एकांकी अध्ययन उपागम तथा प्रतीक अध्ययन विधि का सहारा लिया गया है। आंकडो एवं सूचनाओं के संग्रहण के लिए नगर का गहन पर्यवेक्षण किया गया है। इसके अतिरिक्त शासकीय, अशासकीय कार्यालयों से अभिलेख, आंकडे तथा मानचित्र प्राप्त किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तरी भाग में विस्तृत सरगुजा जिले के मुख्यालय के रूप में अम्बिकापुर नगर की विशिष्ट पहचान है। राष्ट्रीय

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

राजमार्ग क्रमांक 43 (कटनी से गुमला) पर अवस्थित इस नगर से 240 कि.मी. की दूरी पर बिलासपुर, 340 कि.मी की दूरी पर वाराणसी तथा 335 कि.मी. पर रांची नगर स्थित है। भौगोलिक रूप से अम्बिकापुर नगर 23' 17' उत्तरी अक्षांश तथा 83' 02' पूवी देशांतर के मध्य स्थित है। 20 नवबंर 1939 से नगर के रूप में अस्तित्व में आये अम्बिकापुर की 1941 की जनगणना में कुल जनसंख्या 8517 थी। प्रारंभ में अपने बाह्य वृद्धिक्षेत्र फुन्दुरडीहारी को सम्मिलित कर नगर का कुल क्षेत्रफल 10.03 वर्ग कि.मी था।

25 नवबंर 2005 तक अम्बिकापुर नगर के अंतर्गत कुल 2462.02 हेक्टेयर क्षेत्र सम्मिलित

क्रमांक	भूमि का वर्गीकरण	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	प्रतिशत
1.	विकसित क्षेत्र	1400.96	24.40
2.	अनुपयोगी भूमि (जलमग्न)	276.00	4.81
3.	रिक्त क्षेत्र (उपयोगी भूमि)	4063.43	70.79
नगर निवेश का कुल क्षेत्रफल		5740.39	100.00

है। नगर की बढ़ती जनसंख्या तथा विस्तार के कारण 01 अप्रेल 2001 को अम्बिकापुर को नगरपालिक निगम का दर्जा प्रदान कर दिया गया। वर्ष 2001 में जहां इसकी जनसंख्या 1,01635 थी 2011 में बढकर 1,23173 हो गयी है। वर्तमान में अम्बिकापुर नगर छत्तीसगढ़ राज्य का एक प्रशासनिक एवं वाणिज्यिक नगर के रूप में जाना जाता है।

नगरीय भूमि उपयोग

नगरीय भूमि उपयोग से आशय नगर सीमा में स्थित धरातलीय क्षेत्र के उपयोग से है। नगर में धरातलीय क्षेत्र को निर्मित कर उसका उपयोग किया जाता है। इस प्रकार नगर में दो प्रकार के भूमि उपयोग क्षेत्र पाये जाते है।

(अ) निर्मित क्षेत्र

(ब) गैर निर्मित क्षेत्र

निर्मित क्षेत्र पर विविध प्रकार के भवन, सड़कें, गलियां, परिवहन के स्थल एवं मार्ग, स्टेडियम इत्यादि का अस्तित्व होता है जबकि गैर निर्मित क्षेत्र में खुली भूमि, खेल के मैदान, जलाशय, कृषि भूमि आदि का अस्तित्व होता है। प्रसिद्ध नगर नियोजक एच. बार्थोलोमेव (1955) ने नगरीय भूमि उपयोग को दो बडे वर्गो (क) विकसित क्षेत्र, (ख) रिक्त क्षेत्र में विभक्त किया है।

अम्बिकापुर नगर अपनी बाह्य वृद्धि क्षेत्र के साथ कुल 5740.39 हेक्टेयर क्षेत्रफल में विस्तृत है। जिसमें 2462.02 हेक्टेयर क्षेत्र नगरपालिक निगम की सीमा के अंतर्गत जबकि 3278.37 हेक्टेयर भूमि नगर पालिक निगम सीमा के बाहर के निवेश क्षेत्र के है।

सारणी क्रमांक 1

अम्बिकापुर नगर : भूमि उपयोग का वर्गीकरण (2009)

भूमि उपयोग के उक्त वर्गीकरण से स्पष्ट होता है कि अम्बिकापुर नगर के विकसित क्षेत्र के क्षेत्रफल 1400.96 हेक्टेयर में दो प्रकार के निर्मित क्षेत्र पाये जाते है:-

1. निजी स्तर पर विकसित क्षेत्र
2. सार्वजनिक स्तर पर विकसित क्षेत्र

निजी स्तर के जो विकसित क्षेत्र है उनमें एकल, संयुक्त तथा कुटुम्बीय अधिवास, व्यापारिक प्रतिष्ठान तथा वर्क शॉप, छोटे एवं हल्के उद्योगों से संबंधित भूमि सम्मिलित है, जबकि सार्वजनिक स्तर पर विकसित क्षेत्र के अंतर्गत

सडकें व गलियां, पार्क एवं खेल के मैदान, सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी भवन एवं सम्पत्ति जैसे शिक्षण संस्थाएं, बस अडडा, गिरजाघर, मंदीर, क्लब, कब्रिस्तान, इत्यादि, सम्मिलित हैं।

सारिणी क्रमांक - 2

अम्बिकापुर नगर: विकसित क्षेत्र का भूमि उपयोग वर्गीकरण (2009)

क्रमांक	भूमि उपयोग वर्गीकरण	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	विकसित क्षेत्र का प्रतिशत
1.	आवासीय भूमि	712.00	50.82
2.	वाणिज्यिक भूमि	96.00	6.85
3.	औद्योगिक भूमि	3.84	0.27
4	सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक भूमि	142.12	10.14
5.	मनोरंजन/जलाशय	158.36	11.30
6.	यातायात एवं संचार	288.64	20.62
कुल विकसित क्षेत्रफल		1400.96	100.00

उपयोगी भूमि:-

(अ) कृषि भूमि 4030.52

(ब) ग्रामीण बसाव क्षेत्र 308.91

जो नगरीय क्षेत्र में सम्मिलित है

नगर निवेश का कुल क्षेत्रफल 5740.39

अम्बिकापुर नगर के विकसित भूमि का क्षेत्रफल 1400.96 हेक्टेयर है जिसे नगरपालिक निगम ने 40 वार्डो में वर्गीकृत किया है । नगर के विभिन्न भागों में भूमि उपयोग प्रतिरूप में नियमितताएं एवं भिन्नताएं पायी जाती है। अम्बिकापुर नगर की कुल विकसित भूमि को उसकी उपयोगिता के आधार पर निम्न वर्गो में बांटा गया है -

1 आवासीय क्षेत्र

आावासीय सुविधा प्रदान करना नगर का प्रमुख कार्य होता है। नगर के क्रिया-कलापों को संचालित करने वाली जनसंख्या के लिए स्वस्थ, सुरूचिपूर्ण और उपयुक्त स्थिति का आवास उपलब्ध कराना नगरीय व्यवस्था से जुडा एक आधारी पक्ष हैं । नगरीय भूमि के विभिन्न उपयोगों में सर्वाधिक आवासीय उपयोग होता है, जो कि सामान्यतः 30 प्रतिशत से 40 प्रतिशत होता है। एक अध्ययन में पाया गया है कि एक लाख से कम जनसंख्या वाले भारतीय नगरों में 63 से 88 प्रतिशत तक आवासीय भूमि उपयोग पाया जाता हैं। (जोशी, आर-1990) अध्ययन क्षेत्र अम्बिकापुर नगर में विकसित क्षेत्र के 50.82 प्रतिशत भूमि आवासीय के अंतर्गत है।

नगर को आवासीय दृष्टि कोण से 40 वार्डो में विभाजित किया गया है। इन वार्डो में प्रति हेक्टेयर 11011 व्यक्ति का घनत्व पाया जाता है। संपूर्ण नगरपलिक निगम क्षेत्र की परिसीमा में 3338 कच्चे आवास, 2906 अर्द्ध पक्के आवास, एवं 7522 पक्के आवास इस प्रकार 13766 रिहायसी इकाइयां विद्यमान है। सामान्य सर्वेक्षण से ज्ञात होता है नगर के लोक नायक, गौरी वार्ड, चंद्रशेखर नमनाकला, मंगल पाण्डेय, देवीगंज, तिलक तथा लक्ष्मी बाई वार्डो में अर्द्ध पक्के मकानों की संरचनाए पायी जाती है जबकि श्यामा प्रसाद मुखर्जी, मदर टेरेसा, गोधनपुर, लक्ष्मीबाई, तिलक, मंगल पाण्डेय वार्ड, में कच्चे मकानों की संरचानाएं अधिक है। शेष वार्डो में पक्के मकानों की संरचनाएं अधिक पायी जाती है।

ग्रामीण क्षेत्रों से रोजगार की तलाश में लोगों का नगरों की ओर आना एक सामान्य विशेषता है। इस तरह के लोगों द्वारा अपने कार्यक्षेत्र के समीप अतिक्रमण कर झुग्गी झोपडियों का निर्माण कर लेते हैं। ऐसे अयोग्य आवासीय क्षेत्रों को 'गिरावट वाला क्षेत्र' अथवा गंदी बस्ती कहा जाता है। अम्बिकापुर नगर में इस प्रकार के 1145 कच्चे एवं 270 पक्के मकानों की संरचनाओं की पहचान की गयी है, जिनमें 7928 परिवार अधिवासित है, जिनकी जनसंख्या लगभग 37520 है। सामान्यतः नगर के नवापारा, खालपारा, केनाबांध, जनपदपारा, ठनगनपारा, कौवा डांड, जेल बांध, हर सागर तालाब, खरसिया नाका, मणिपुर, दरीपारा, सत्तीपारा, जोडा तालाब , इमली पारा, मायापुर, शिकारी रोड तथा स्टेट बैंक के समीप के क्षेत्रों में गंदीबस्ती एवं झुग्गी झोपडी के आवास पाये जाते है। इन बस्तियों में आवागमन, जलनिकास, जलापूर्ति एवं बुनियादी सुविधाओं का अभाव पाया जाता है (राव.वी.पी. 1978)।

2 वाणिज्यिक क्षेत्र

नगर का वाणिज्यिक क्षेत्र नगरीय जीवन का आधार होता है। नगर के हृदय स्थल के रूप मे विकसित केन्द्रीय व्यापारिक क्षेत्र नगर का महत्वपूर्ण भाग है जहां व्यापारिक कार्यों की प्रधानता के कारण ऊंचे भवन गहनतम् भूमि उपयोग उच्चतम भूमि मूल्य, सर्वाधिक मार्गो की केन्द्रीयता, पैदल चलने वाली जनसंख्या का जमघट और नगर का सर्वाधिक परिचित भाग होता है। यहां फुटकर एवं थोक व्यापार, वित्तीय संस्थाए, मनोरंजन केन्द्र, होटल और रेस्त्रां तथा अनेक प्रकार की सेवाएं सम्बद्ध होती हैं।

अम्बिकापुर नगर उत्तरी छत्तीसगढ़ क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है। पाश्ववर्ती क्षेत्रों में कोयले एवं बाक्साइट के खानों के विस्तार के कारण यहां वाणिज्यिक गतिविधियां विकसित हुई है। नगर के सभी प्रमुख मार्गों पर कपडे, बर्तन, किराने के थोक एवं खुदरा बाजार मिश्रित रूप में संचालित है।

अनाज एवं सब्जी मंडी के थोक एवं खुदरा व्यापार नगर के मध्य में स्थित गुदरी बाजार कपडा,, लोहा, बर्तन एवं अन्य सामग्रियों के व्यापार देवीगंज रोड, सदर रोड, खरसियां रोड, बिलासपुर रोड बिश्रामपुर रोड पर बिखरें हुए है । आटो पार्टस से संबंधित व्यापारिक प्रतिष्ठान संगम चैक, खरसिया चैक के आसपास स्थित है। नगर का केन्द्रीय व्यापारिक क्षेत्र महामाया चौक, गुदरी बाजार क्षेत्र, देवीगंज रोड क्षेत्र, सदर रोड क्षेत्र, बम्ह रोड क्षेत्र, अग्रसेन चैक, जय स्तंभ चैक में विस्तृत है जो नगर का मध्य भाग है। किन्तु कोल्ड स्टोरेज, राईस मिल्स, भवन निर्माण सामग्री, इत्यादि वाणिज्यिक गतिविधियां नगर के बाहरी क्षेत्रों में मुख्य मार्गो पर विकसित हुआ है।

3 औद्योगिक क्षेत्र

सामान्यतः मनुष्य का कोई भी उत्पादक प्रयास उद्योग है, लेकिन वस्तु निर्माण उद्योग पदार्थो के स्वरूप को परिवर्तित करने की ऐसी प्रक्रिया को कहते हैं, जिससे संबधित पदार्थ अधिक उपयोगी बन जाते हैं। ऐसी प्रक्रिया के अंतर्गत कच्चे माल का रूप परिवर्तन पूंजी, श्रम शक्ति तथा अन्य सहायक, सामग्रियों का उपयोग करके किया जाता है। (सिंह,ओ.पी 1987)

किसी नगर अथवा क्षेत्र के आर्थिक विकास के प्रमुख घटकों में औद्योगिक इकाइयों की स्थापना आर्थिक सम्पन्नता को प्रतिबिम्बित करता है। औद्योगिक प्रतिष्ठानों के अंतर्गत वर्तमान में 3.84 हेक्टेयर भूमि उपयोग की जा रही है, जो नगर में औद्योगिक क्रिया कलापों के न्यून

विकास का प्रतीक है। वर्ष 2000-2001 में जहां नगर में 156 स्थापित लघु उद्योगों की इकाइयां पंजीकृत थीं, वर्ष 2004 -05 में यह घटकर मात्र 09 रह गयी है। इससे यह स्पष्ट होता है, नगर में उद्योगों की स्थापना के प्रतिरूचि अत्यंत कम है। वर्तमान में वन एवं कृषि आधारित औद्योगिक इकाइयों का सकेन्द्रण पाया जाता है। जिनमें लकडी आरा मील, पोहा मील, राइस मील प्रमुख है। नगर में सीमेन्ट पाइप तथा मेटल उद्योग (एल्युमीनियम बर्तन) की इकाईयां भी कार्यरत हैं। भविष्य में नगर में औद्योगिक इकाइयों के विस्तार की संभावना को देखते हुए ग्राम बिशुनपुर एवं मेण्ड्रा खुर्द ग्रामों में लगभग 96.16 हेक्टेयर भूमि को आरक्षित किया गया है। नगर की प्रमुख औद्योगिक इकाइयों में पी.जी. कालेज के समीप के औद्योगिक प्रक्षेत्र, खरसिया मार्ग, मोमिनपुर, नमनाकला, बिलासपुर चैक, रानीतालाब, चोपडापारा, रामानुजगंज नाका की आरा मिल्स, खरसिया मार्ग, की तेल मील गंगापुर रिंगरोड खरसिया चैक के पास की राइस मिल्स प्रमुख उद्योग संगत इकाइयां हैं।

4 सार्वजनिक एवं अर्द्धसार्वजनिक भूमि

इसके अंतर्गत प्रशासनिक, शैक्षणिक, चिकित्सा ,सामाजिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक व अन्य गतिविधियों के अंतर्गत उपयोग की जा रही भूमि को सम्मिलित किया जाता है। अम्बिकापुर नगर में इसके अंतर्गत 142.12 हेक्टेयर भूमि सम्मिलित है जो कुल भूमि उपयोग का 10.14 प्रतिशत है। नगर स्वशासी केन्द्र होते है, फलतः नगर प्रबंधन के लिए प्रशासकीय संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका नगरीय संरचना में देखने को मिलती है। चूकि नगर अपने पाश्ववर्ती विस्तृत क्षेत्र का केन्द्र स्थल होता है, जिसके कारण विविध संस्थाएं, कलेक्टोरेट, न्यायालय, पुलिस संस्थाएं तहसील, जेल, सिविल लाइन ,जिला एवं प्रांतीय महत्व के कार्यालय जैसी संस्थाएं नगर की परिसीमा में सुविधाजनक क्षेत्रों में अवस्थित होती हैं। अम्बिकापुर नगर में 2010-11 की स्थिति में 182 केन्द्रीय, राज्य शासन, स्वायत स्थानीय शासन व बैंक, बीमा से संबंधित कार्यालय स्थित हैं।

इस तरह शिक्षण संस्थाओं के रूप में 8 शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय, 34 हायर सेकेण्डरी स्कूल एवं हाईस्कूल, 40 माध्यमिक विद्यालय, 180 प्राथमिक स्कूल तथा 2 तकनीकी शिक्षण संस्थान, 5 शिक्षा महाविद्यालय व डाइट प्रशिक्षण संस्थान स्थित है। छत्तीसगढ़ राज्य का एक मात्र सैनिक स्कूल भी यहां स्थित है।

इन सभी महाविद्यालयों, उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों तथा प्राथमिक विद्यालयों में से अधिकांश के पास सर्वसुविधायुक्त भवन एवं क्रीडांगन स्थित है। नगर में विश्वविद्यालय की स्थापना हो जाने से यहां शैक्षणिक सुविधाओं का बहुत तेजी से विस्तार हो रहा है।

नगर में चिकित्सा सुविधा केन्द्रों का भी निरंतर विस्तार हो रहा है। जिला चिकित्सालय, परीडा नर्सिंग होम, सिद्धार्थ हास्पिटल, सोनी क्लिनिक, कुण्डला मेमोरियाल हास्पिटल, होली क्रास अस्पताल, आरोग्य नर्सिंग होम, अरिहंत अस्पताल, जीवन ज्योति हॉस्पिटल, लाइफ लाइन हास्पिटल, श्री राम हास्पिटल इत्यादि चिकित्सा केन्द्र के रूप में स्थित है। इन समस्त चिकित्सा केन्द्रों में लगभग 1200 बिस्तरों की सुविधा उपलब्ध है।

नगर की भूमि का उपयोग सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए भी किया जा रहा है। गणेशोत्सव ,दुर्गोत्सव, महाशिवरात्री,

रथयात्रा , मोहर्रम, क्रिसमस, के समय में नगर के विविध स्थानों में कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। सर्कस एवं मीनाबाजार के लिए कलाकेन्द्र मैदान में स्थान प्रदान किया जाता है।

5 मनोरंजन एवं जलाशय की भूमि

मनोरंजन भी नगर का एक अनिवार्य कार्य है क्योंकि नगर की मेहनतकश जनसंख्या को मनोरंजन के लिए सिनेमा, थियेटर, पार्क, खेल के मैदान, पिकनिक स्थल की आवश्यकता होती है। वर्तमान में अम्बिकापुर नगर में 158.36 हेक्टेयर भूमि मनोरंजन एवं जलाशय के अंतर्गत सम्मिलित है जो नगर के कुल क्षेत्र का 11.30 प्रतिशत है ।

नगर में वर्तमान में 3 सिनेमा हाल, संजय पार्क गांधी स्टेडियम, कला केन्द्र मैदान पुलिस ग्राउंड , पी.जी. कालेज ग्राउंड एवं हाकी स्टेडियम , वन विभाग क्रीडा मैदान, सेन्ट जेवियर्स क्रीडा मैदान, वाटर पार्क, जल क्रीडांगण (जल तरण केन्द्र) आकाशवाणी, दूरदर्शन रिलेकेन्द्र, एफ.एम. रेडियो स्टेशन मनोरंजन के केन्द्र के रूप में विकसित है।

इसी तरह नगर में अनेक तालाब एवं जलाशय भी स्थित है जिनमें जोडा तालाब, चंबोथी तालाब, मेरिन ड्राइव, हर सागर तालाब, दीवान तालाब, केनाबांध तालाब, महामाया तालाब, जेल बांध तालाब, नमना तालाब, बरेज तालाब, मालवीय तालाब, जिनमें से अधिकांश में आमोद-प्रमोद , व मत्स्य पालन इत्यादि के लिए उपयोग किया जाता है। नगर में जलस्तर एवं जलसंभरण के लिए इन तालाबों की बहुत अधिक उपयोगिता हो रही है। इन तालाबों एवं जलाशयों के अंतग्रत 142.64 एकड् भूमि सम्मिलित है।

6 यातायात एवं परिवहन

यातायात के साधन नगरीय जीवन क आधार होते है। आधुनिक काल में सड़क एवं रेल नगरीय यातायात के अधार हैं। इन्हें नगरीय जीवन की धमनी कहा जाता है। यातायात के मार्ग नगरीय सेवा के साथ-साथ नगर को उसके सेवा क्षेत्र से भी जोडते है जिससे नगर अपनी केन्द्र स्थलीय कार्य को सम्पदित कर पाता है। अम्बिकापुर नगर में इसके अंतर्गत 288.64 हेक्टेयर भूमि सम्मिलित है जो नगर के कुल भूमि उपयोग का 20.62 प्रतिशत है। यह नगर 43 राष्ट्रीय राजमार्ग (कटनी से गुमला) पर अवस्थित है इसी तरह बिलासपुर-गढ़वा, रायपुर बिलासपुर-वाराणसी अंतर्राज्यीय मार्ग, भी यहां से होकर गुजरता है।

दिल्ली से कटनी होकर बिलासपुर व उडीसा की ओर जाने वाली रेल लाइन के मध्य अनुपपुर से अम्बिकापुर की रेल लाइन का अंतिम रेल्वे स्टेशन यहां पर स्थित है। इसी तरह अम्बिकापुर नगर से 14 कि.मी. की दूरी पर स्थित ग्राम दरिमा में एक हवाई पटटी स्थित है। नगर का वर्तमान रिंग रोड नगरीय विस्तार के कारण अब नगर के केन्द्रीय भाग में समाहित होता जा रहा है, जिससे लगातार दुर्घटनाएं घटित हो रही है। अतः नगर के लिए एक मुद्रिका मार्ग (रिंग रोड) की आवश्यकता है। नगर में एक अंतर्राज्जीय बस स्टेण्ड भी अवस्थित है, जहां से उडीसा, झारखंड, उ.प्र., बिहार मध्यप्रदेश के लिए प्रतिदिन बसें आवागमन करती हैं। नगर में यातायात की सुविधा के लिए यथा स्थान पार्किग स्थल, पिकअप स्टेशन ,भी विकसित किया गया है।

नवीन प्रस्ताव में सिटी बस भी चलाने का मार्ग निर्धारित कर उसके लिए बस स्टाप का निर्धारण किया गया है। नगर निवेश क्षंेत्र के पंचपेडी

ग्राम में 25 हेक्टेयर भूमि भी यातायात के लिए प्रस्तावित किया गया है।

नगरीय भूमि उपयोग की समस्याएं

वर्तमान में अम्बिकापुर नगर निरंतर विकास की प्रक्रिया में अग्रसर है, किन्तु नगरपालिक निगम तथा उसके अधीन कार्यरत नगर निवेश कार्यालय द्वारा निर्धारित भूमि उपयोग पर संबंधित कार्य नही करने वालों पर विशेष ध्यान नहीं देने के कारण नगर में भूमि एवं उसके उपयोगों से उचित संबंध परिलक्षित नहीं हो रहा है। नगर के प्रमुख मार्गों पर वाणिज्यिक गतिविधियां अधिक विकसित हो जाने से इसका प्रत्यक्ष प्रभाव नगरीय यातायात पर पड़ रहा है, जिससे नगरीय जीवन प्रभावित हो रहा है।

नगर में असंगत भूमि उपयोग होने से नगरीय जीवन के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं होने के भी कई प्रकरण दिखाई दे रहें है। नगर के प्रतापपुर नाका चैक के समीप डेयरी, नमनाकला में मुर्गीपालन, खरसिया चौक एवं पैलेस के समीप परिवहन अभिकरण (वर्कशाप), खरसिया रोड, गगांपुर में तेल एवं चावल मिल से प्रदूषण, चांदनी चौक रिंग रोड आवासीय क्षेत्र के समीप इंडेन कंपनी का गैस गोदाम, बिलासपुर चैक एवं विश्रामपुर रोड में परिवहन समस्याओं को जन्म देता बांस एवं कोल डिपो, नगर के मध्य से गुजरने वाले सभी प्रमुख मार्गो पर भवन निर्माण सामग्री गोदाम होने के कारण उत्पन्न परिवहन समस्या से नगरीय जीवन प्रभावित हो रहा है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि नगरीय अकारिकी में आवासीय, व्यापारिक व परिवहन भूमि उपयोग की प्रमुख भूमिका होती है। अम्बिकापुर नगर में इन उपयोगों के साथ साथ जलाशय के अंतर्गत भूमि का उपयोग भी एक प्रमुख तथ्य है। उत्तरी छत्तीसगढ़ के प्रमुख नगर होने के कारण जनसंख्या तीव्र गति से ग्रामीण क्षेत्रों से अम्बिकापुर नगर की ओर उन्मुख हो रही है। नगर नियोजन सिद्धांतों के अनुरूप नगरीय आकारिकों को व्यवस्थित करने की आवश्यकता है। नगर वासियों के स्वास्थ्य एवं नगरीय सौन्दर्य को महत्वपूर्ण मानते हुए खुले स्थानों की आवश्यकता व महत्व सदैव बना रहता है। इसे ध्यान रखकर अम्बिकापुर नगर के विकास की योजना बनानी होगी।

संदर्भ ग्रन्थ

1 Bartholomew, H ¼1955½, Land use in American cities, Harvard University Press, Cambridge pp-14

2 राव बी.पी. एवं नन्देश्वर शर्मा (2008), नगरीय भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, पृष्ठ 204-257

3 Joshi, R ¼1990½, Urban Land use in Bhilwara District, Ph.D. Thesis, University of Rajasthan, Jaipur

4 राव वी.पी. (1978), भारतीय नगरों की मलिन एवं अव्यवस्थित बस्तियां गोरखपुर का विशेष अध्ययन उ. भा. भू. प. अंक 14 भाग 2

5 सिंह ओ.पी. (1987), नगरीय भूगोल, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी, पृष्ठ 241

6 Khan, Z.T. & Sunita Sonwani ¼2011½, Changes in land use pattern in Raipur city, Uttar Bharat Bhoogol Patrika, Gorakhpur Vol- 41,No. 3.pp 21-28

7 Govt. of Chhattisgarh ,Directorate of Town & Country planning " Ambikapur Development plan "- A Draft 2010

8 Gautam, N.C. ¼1975½ "Land use study in Bikaner city" Decan Geographer Vol. XIII part 01 and 02, pp-209-216